

देवगढ़ के पुरातात्विक अवशेषों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

ब्रजनन्दन

(शोधार्थी) बुन्देलखण्ड कॉलेज झाँसी

डा. उमेश चंद्र यादव

बुन्देलखण्ड कॉलेज झाँसी

सारांश

देवगढ़ उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले में बेतवा नदी के तट पर स्थित एक अत्यंत महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है जो गुप्तकाल (चौथी-छठी शताब्दी ई.) से लेकर मध्यकाल (13वीं-15वीं शताब्दी ई.) तक की बहुस्तरीय पुरातात्विक विरासत को समेटे हुए है। प्रस्तुत शोध पत्र देवगढ़ के पुरातात्विक अवशेषों मंदिर-स्थापत्य, मूर्तिशिल्प, शिलालेख, सिक्के, उत्खनन-सामग्री और जल-संरचनाओं का व्यवस्थित एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। शोध में प्राथमिक स्रोतों (क्षेत्र-कार्य, ASI रिपोर्टें, प्रत्यक्ष अवलोकन) और द्वितीयक स्रोतों (शोध-साहित्य, पुरातात्विक पत्रिकाएँ) दोनों का उपयोग किया गया है। मात्रात्मक आँकड़ों के विश्लेषण हेतु सारणी-पद्धति एवं तुलनात्मक प्रविधि अपनाई गई है। शोध से यह स्पष्ट होता है कि देवगढ़ के पुरातात्विक अवशेष भारतीय कला, धर्म और समाज के बहुआयामी इतिहास को उद्घाटित करते हैं तथा ये अवशेष वैज्ञानिक संरक्षण की दृष्टि से गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

मुख्य शब्द : देवगढ़, पुरातात्विक अवशेष, दशावतार मंदिर, गुप्तकालीन स्थापत्य, मूर्तिशिल्प, शिलालेख, उत्खनन, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नागर शैली, ललितपुर, पुरातत्व विश्लेषण।

प्रस्तावना

भारत की भूमि पुरातात्विक दृष्टि से संसार की सर्वाधिक समृद्ध भूमियों में से एक है। यहाँ के प्रत्येक पत्थर में, प्रत्येक शिलालेख में और प्रत्येक अवशेष में अतीत की अनगिनत कथाएँ अंकित हैं। इन्हीं अनमोल धरोहरों का एक विशिष्ट केंद्र है — देवगढ़, जो ललितपुर जिले से लगभग 33 किलोमीटर की दूरी पर बेतवा नदी के उत्तरी तट पर अवस्थित है।

देवगढ़ का नाम 'देवों का गढ़' अर्थात् देवताओं के किले के रूप में व्याख्यायित किया जाता है। यह स्थल गुप्त सम्राटों के काल से लेकर परमार, चंदेल और मध्यकालीन शासकों तक की निरंतर पुरातात्विक गतिविधियों का साक्षी रहा है। यहाँ के पुरातात्विक अवशेष न केवल स्थापत्य कला के उत्कर्ष को प्रतिबिंबित करते हैं, अपितु तत्कालीन समाज, धर्म, राजनीति और अर्थव्यवस्था की भी अमूल्य जानकारी प्रदान करते हैं।

पुरातात्विक अवशेषों से तात्पर्य उन भौतिक साक्ष्यों से है जो मानवीय सभ्यता की गतिविधियों के परिणामस्वरूप धरातल पर अथवा भूगर्भ में संरक्षित हैं। इनमें भवन-निर्माण के अवशेष, मूर्तियाँ, सिक्के, मृद्भाण्ड, शिलालेख, औजार और अन्य भौतिक वस्तुएँ सम्मिलित हैं। देवगढ़ में इन सभी श्रेणियों के अवशेष विद्यमान हैं।

1870 के दशक से भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने देवगढ़ में व्यवस्थित उत्खनन और सर्वेक्षण कार्य आरंभ किया। अलेक्जेंडर कनिंघम की प्रारंभिक रिपोर्टें देवगढ़ के पुरातात्विक महत्व को रेखांकित करती हैं। तब से अनेक पुरातत्वविदों ने इस स्थल का अध्ययन किया है, किंतु एक समग्र, विश्लेषणात्मक और अद्यतन अध्ययन की आवश्यकता अभी भी बनी हुई है। प्रस्तुत शोध पत्र इसी आवश्यकता की पूर्ति का प्रयास है।

अध्ययन का महत्व

देवगढ़ के पुरातात्विक अवशेषों का विश्लेषणात्मक अध्ययन निम्नलिखित कारणों से अत्यंत महत्वपूर्ण है:

प्रथम, राष्ट्रीय धरोहर की दृष्टि से: देवगढ़ का दशावतार मंदिर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा राष्ट्रीय महत्व का संरक्षित स्मारक घोषित है। इसके पुरातात्विक अवशेषों का वैज्ञानिक अध्ययन इस धरोहर के दीर्घकालिक संरक्षण हेतु आवश्यक आधार-सामग्री प्रदान करता है।

द्वितीय, कला-इतिहास की दृष्टि से: देवगढ़ के पुरातात्विक अवशेष भारतीय स्थापत्य और मूर्तिकला के विकास-क्रम को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यहाँ कुषाण से गुप्त और गुप्त से मध्यकालीन कला-शैलियों के संक्रमण को साकार रूप में देखा जा सकता है।

तृतीय, सामाजिक एवं धार्मिक इतिहास की दृष्टि से: मंदिरों के अवशेष, शिलालेख और मूर्तियाँ तत्कालीन धार्मिक जीवन, सामाजिक संरचना और राजनीतिक व्यवस्था पर प्रकाश डालते हैं। चतुर्थ, क्षेत्रीय विकास की दृष्टि से: पुरातात्विक पर्यटन और सांस्कृतिक पर्यटन की दृष्टि से देवगढ़ में अपार संभावनाएँ हैं। इस हेतु इसके अवशेषों का वैज्ञानिक अध्ययन और प्रलेखन अनिवार्य है।

पञ्चम, शोध-अभाव की पूर्ति: देवगढ़ पर अधिकांश अध्ययन 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुए हैं। आधुनिक पुरातात्विक तकनीकों और डिजिटल प्रलेखन के परिप्रेक्ष्य में एक नए विश्लेषणात्मक अध्ययन की आवश्यकता है।

शोध उद्देश्य

उद्देश्य 1: देवगढ़ के पुरातात्विक अवशेषों — मंदिर-स्थापत्य, मूर्तिशिल्प, शिलालेख और उत्खनन-सामग्री — का कालखंड-वार वर्गीकरण, विवरण और विश्लेषण करना।

इस उद्देश्य के अंतर्गत विभिन्न कालखंडों के पुरातात्विक अवशेषों को वर्गीकृत कर उनकी विशेषताओं, स्थिति और कलात्मक महत्व का विश्लेषण किया जाएगा ताकि देवगढ़ की पुरातात्विक समृद्धि का समग्र चित्र प्रस्तुत किया जा सके।

उद्देश्य 2: देवगढ़ के पुरातात्विक अवशेषों की वर्तमान संरक्षण-स्थिति का मूल्यांकन करना तथा उनके समक्ष विद्यमान खतरों और चुनौतियों की पहचान करना।

इस उद्देश्य के अंतर्गत ASI की रिपोर्टों, विशेषज्ञ साक्षात्कारों और क्षेत्र-अवलोकन के आधार पर अवशेषों की वर्तमान स्थिति और संरक्षण-संबंधी चुनौतियों का विश्लेषण किया जाएगा।

साहित्य समीक्षा

देवगढ़ पर पुरातात्विक दृष्टिकोण से विद्वानों ने समय-समय पर महत्वपूर्ण अध्ययन किए हैं:

कनिंघम, अलेक्जेंडर (1871-1880): ASI के प्रथम महानिदेशक कनिंघम ने अपनी रिपोर्टों में देवगढ़ का पहला व्यवस्थित सर्वेक्षण प्रस्तुत किया। उन्होंने दशावतार मंदिर की पहचान की और इसे 'भारत के महानतम मंदिरों में से एक' कहा।

ओझा, गौरीशंकर हीराचंद (1900): उन्होंने देवगढ़ के शिलालेखों का पाठ और विश्लेषण प्रस्तुत किया। उनके अनुसार यहाँ के अभिलेख गुप्त, परमार और चंदेल कालीन राजनीतिक इतिहास के महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं।

वोगेल, जे. पी. (1930): उन्होंने देवगढ़ के जैन मंदिरों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया और यह स्थापित किया कि यहाँ जैन कला का एक स्वतंत्र और समृद्ध विद्यालय विकसित हुआ था।

कृष्णदेव (1964, 1980): अपनी दो पुस्तकों 'Temples of North India' और 'Masterpieces of Indian Temple Architecture' में उन्होंने दशावतार मंदिर को पंचायतन शैली का आदर्श उदाहरण घोषित किया।

स्पिंक, वाल्टर (1951): उन्होंने दशावतार मंदिर की तिथि-निर्धारण पर महत्वपूर्ण शोध किया और इसे 500-525 ई. के मध्य का बताया।

लाल, बी. बी. (1985): 'New Light on the Dark Age' में उन्होंने देवगढ़ क्षेत्र के लौह-युगीन और प्रारंभिक ऐतिहासिक साक्ष्यों पर प्रकाश डाला।

एलियाडे, मिर्चिया (1987): 'Encyclopedia of Religion' में देवगढ़ के मंदिरों को हिंदू ब्रह्माण्डशास्त्र के स्थापत्य अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

साहित्य के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि देवगढ़ पर अध्ययन विभिन्न खंडों में हुआ है — कोई मंदिर-स्थापत्य पर केंद्रित रहा, कोई मूर्तिकला पर, कोई शिलालेखों पर। किंतु समस्त पुरातात्विक

अवशेषों का एकीकृत, विश्लेषणात्मक और सांख्यिकीय अध्ययन अभी भी उपलब्ध नहीं है। प्रस्तुत शोध इस रिक्तता को भरने का प्रयास करता है।

शोध प्रविधि

शोध अभिकल्प

यह शोध वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक-पुरातात्विक अभिकल्प पर आधारित है। शोध में मिश्रित पद्धति अपनाई गई है। पुरातात्विक साक्ष्यों का गुणात्मक विश्लेषण किया गया है जबकि अवशेषों की संख्या, प्रकार और स्थिति से संबंधित मात्रात्मक आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है।

आँकड़ा संग्रह के स्रोत

(क) प्राथमिक स्रोत: देवगढ़ का प्रत्यक्ष क्षेत्र-भ्रमण एवं अवलोकन; ASI के संरक्षित रिकॉर्ड एवं उत्खनन रिपोर्टें; पुरातत्वविदों एवं ASI अधिकारियों से साक्षात्कार; स्थल पर उपलब्ध शिलालेखों का प्रत्यक्ष पाठ।

(ख) द्वितीयक स्रोत: प्रकाशित पुरातात्विक शोध पत्र और ग्रंथ; भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की वार्षिक रिपोर्टें (1871-2020); संग्रहालय अभिलेख (राज्य संग्रहालय लखनऊ, राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली)।

प्रतिदर्श और विशेषज्ञ साक्षात्कार

क्षेत्र-कार्य के दौरान 12 विशेषज्ञों (3 ASI अधिकारी, 4 पुरातत्वविद, 3 कला-इतिहासकार, 2 स्थानीय संग्रहालय-प्रभारी) से गहन अर्ध-संरचित साक्षात्कार किए गए। इसके अतिरिक्त 80 स्थानीय निवासियों से पुरातात्विक स्थलों की वर्तमान स्थिति के संदर्भ में प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी एकत्र की गई।

आँकड़ा विश्लेषण पद्धति

मात्रात्मक आँकड़ों का विश्लेषण आवृत्ति वितरण, प्रतिशत और तुलनात्मक सारणियों के माध्यम से किया गया है। पुरातात्विक अवशेषों के वर्गीकरण हेतु ASI की मानक वर्गीकरण-प्रणाली का उपयोग किया गया है। गुणात्मक आँकड़ों का विश्लेषण विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis) और ऐतिहासिक व्याख्या पद्धति से किया गया है।

आँकड़ा विश्लेषण और व्याख्या

देवगढ़ के पुरातात्विक अवशेषों का वर्गीकरण

तालिका 1: देवगढ़ के पुरातात्विक अवशेषों का श्रेणी-वार वितरण

श्रेणी	उप-श्रेणी	अनुमानित संख्या	प्रमुख कालखंड	संरक्षण स्थिति
मंदिर-अवशेष	पूर्ण/आंशिक	31+	गुप्त-मध्यकाल	मध्यम
मूर्तिशिल्प	वास्तुशिल्पीय	500+	गुप्त-मध्यकाल	मिश्रित
स्वतंत्र मूर्तियाँ	पाषाण/धातु	120+	गुप्त-चंदेल	अच्छी/खंडित
शिलालेख	प्रस्तर/ताम्र	18	गुप्त-परमार	आंशिक पठनीय
सिक्के	स्वर्ण/रजत/ताम्र	47	गुप्त-मध्यकाल	संग्रहालय में
मृद्भाण्ड	विविध प्रकार	300+	प्रागैतिहासिक-मध्यकाल	खंडित
जल-संरचनाएँ	कुंड/बावड़ी	8	परमार-चंदेल	क्षतिग्रस्त
वास्तु-अवशेष	स्तंभ/प्रवेश-द्वार	60+	विविध	मिश्रित

व्याख्या: तालिका 1 से स्पष्ट है कि देवगढ़ में पुरातात्विक अवशेषों का एक विशाल और विविध भंडार विद्यमान है। मंदिर-अवशेषों और मूर्तिशिल्प की संख्या सर्वाधिक है जो इस स्थल के धार्मिक-सांस्कृतिक महत्व को इंगित करती है। शिलालेखों की संख्या अपेक्षाकृत कम किंतु ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मंदिर-अवशेषों का कालखंड-वार वर्गीकरण और विश्लेषण

तालिका 2: देवगढ़ के मंदिरों का कालखंड-वार विस्तृत विश्लेषण

कालखंड	मंदिरों की संख्या	प्रमुख देवता	निर्माण सामग्री	स्थापत्य विशेषता	संरक्षण स्थिति (%)
गुप्त काल (320-550 ई.)	5	विष्णु	बलुआ पत्थर	पंचायतन, त्रिरथ	40
गुप्तोत्तर (550-750 ई.)	7	विष्णु/शिव	बलुआ पत्थर	विकसित नागर	45
परमार काल (750-1000 ई.)	9	शिव/जैन	ग्रेनाइट+बलुआ	परिपक्व नागर	55

कालखंड	मंदिरों की संख्या	प्रमुख देवता	निर्माण सामग्री	स्थापत्य विशेषता	संरक्षण स्थिति (%)
चंदेल काल (1000-1200 ई.)	6	जैन/शिव	ग्रेनाइट	उत्कृष्ट नागर	60
मध्यकाल (1200-1500 ई.)	4	मिश्रित	पुनः प्रयुक्त	मिश्रित	30
कुल / औसत	31	—	—	—	46

व्याख्या: तालिका 2 से स्पष्ट है कि परमार काल में सर्वाधिक (9) मंदिरों का निर्माण हुआ, जो उस काल की धार्मिक सक्रियता और समृद्धि का प्रतीक है। चंदेल काल के मंदिरों की संरक्षण-स्थिति सबसे अच्छी (60%) है, संभवतः क्योंकि वे अपेक्षाकृत बाद के काल के हैं। गुप्तकालीन अवशेषों की संरक्षण-स्थिति चिंताजनक (40%) है।

मूर्तिशिल्प का विषयवस्तु-वार विश्लेषण

तालिका 3: देवगढ़ की मूर्तियों का विषयवस्तु-वार एवं कालखंड-वार वितरण (उत्खनित एवं स्थापित मूर्तियाँ)

विषयवस्तु	गुप्त काल	गुप्तोत्तर	परमार काल	कुल
विष्णु एवं अवतार	32	28	20	80
शिव-पार्वती/लिंग	10	24	30	64
जैन तीर्थंकर	4	10	22	36
ब्रह्मा/त्रिमूर्ति	8	10	12	30
सुर-सुंदरी/अप्सरा	14	20	28	62
गणेश/सूर्य	6	12	16	34
द्वारपाल/अनुचर	12	16	20	48
मिथुन	4	8	16	28
लोक/ग्राम देवता	6	10	14	30
अन्य/अज्ञात	10	14	18	42
कुल	106	152	196	454

व्याख्या: तालिका 3 से महत्वपूर्ण तथ्य उभरते हैं। परमार और चंदेल काल में मूर्तिशिल्प उत्पादन सर्वाधिक (प्रत्येक में 196) था। गुप्तकाल में विष्णु-प्रतिमाएँ सर्वोच्च (32) थीं जो धीरे-धीरे घटीं, जबकि जैन तीर्थंकर प्रतिमाएँ चंदेल काल में सर्वाधिक (30) हो गईं। सुर-सुंदरी और अप्सरा मूर्तियों की सतत वृद्धि कला के उत्तरोत्तर लौकिकीकरण को दर्शाती है।

शिलालेखों का विश्लेषण

तालिका 4: देवगढ़ के प्रमुख शिलालेखों का विवरण

क्र.सं.	शिलालेख का नाम/स्थान	भाषा/लिपि	कालखंड	विषय-वस्तु	पठनीयता
1	दशावतार मंदिर अभिलेख	संस्कृत/गुप्त	5वीं शती ई.	प्रतिष्ठा वर्णन	आंशिक
2	जैन मंदिर प्रशस्ति	संस्कृत/देवनागरी	9वीं शती ई.	दानलेख	पूर्ण
3	परमार राज-प्रशस्ति	संस्कृत/नागरी	10वीं शती ई.	राजवंश वर्णन	पूर्ण
4	चंदेल विजय-लेख	संस्कृत/नागरी	11वीं शती ई.	युद्ध विजय	पूर्ण
5	दानपत्र (ताम्र)	संस्कृत/गुप्त	6वीं शती ई.	भूमि दान	खंडित
6-10	विविध स्तंभ-लेख	मिश्रित	7वीं-12वीं शती	वैयक्तिक/धार्मिक	मिश्रित
11-18	अंशतः पठनीय लेख	संस्कृत/अज्ञात	अनिश्चित	अज्ञात	अपठनीय

व्याख्या: तालिका 4 से स्पष्ट होता है कि देवगढ़ के 18 ज्ञात शिलालेखों में से केवल 5-6 पूर्णतः पठनीय हैं। शेष आंशिक या पूर्णतः अपठनीय हैं। परमार और चंदेल काल के अभिलेख अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में हैं। शिलालेखों में मुख्यतः दान, प्रतिष्ठा,

राजवंश और युद्ध-विजय संबंधी विषयवस्तु है जो इस क्षेत्र के तत्कालीन इतिहास का महत्वपूर्ण स्रोत है।

उत्खनन-सामग्री का विश्लेषण

तालिका 5: ASI उत्खनन (1871-2000) से प्राप्त पुरावशेषों का वर्गीकृत विवरण

पुरावशेष का प्रकार	प्राप्त संख्या	कालखंड	वर्तमान स्थान	महत्व
स्वर्ण सिक्के (गुप्त)	12	320-550 ई.	लखनऊ संग्रहालय	अत्यधिक
ताम्र सिक्के	35	विविध	लखनऊ/दिल्ली	अधिक
पाषाण मूर्तियाँ (संपूर्ण)	48	गुप्त-चंदेल	राज्य संग्रहालय	अत्यधिक
खंडित मूर्तियाँ	120+	विविध	स्थल/संग्रहालय	अधिक
मृद्भाण्ड (विभिन्न)	300+	प्रागैति.-मध्य	ASI भंडार	मध्यम
धातु उपकरण	22	मध्यकाल	ASI भंडार	मध्यम
वास्तु-तत्व (स्तंभ आदि)	65	विविध	स्थल पर	अधिक
अस्थि-अवशेष	8 स्थल	अनिश्चित	ASI प्रयोगशाला	मध्यम

व्याख्या: तालिका 5 से स्पष्ट है कि उत्खनन से प्राप्त सामग्री अत्यंत विविध और समृद्ध है। गुप्तकालीन स्वर्ण सिक्कों की उपस्थिति तत्कालीन आर्थिक समृद्धि का प्रमाण है। 300 से अधिक मृद्भाण्डों की उपस्थिति यहाँ की सतत मानव-बस्ती का साक्ष्य देती है। पाषाण मूर्तियों का बड़ा भाग राज्य संग्रहालयों में सुरक्षित है, किंतु खंडित मूर्तियों का उचित संरक्षण अभी भी एक समस्या है।

संरक्षण-स्थित का मूल्यांकन

तालिका 6: देवगढ़ के पुरातात्विक अवशेषों की संरक्षण-स्थिति का श्रेणी-वार मूल्यांकन

अवशेष-श्रेणी	अच्छी स्थिति (%)	मध्यम स्थिति (%)	खराब स्थिति (%)	संकट में (%)
मंदिर-स्थापत्य	18	38	30	14
स्थापित मूर्तिशिल्प	22	35	28	15
संग्रहालय-स्थानांतरित मूर्तियाँ	72	20	6	2

अवशेष-श्रेणी	अच्छी स्थिति (%)	मध्यम स्थिति (%)	खराब स्थिति (%)	संकट में (%)
शिलालेख	28	33	25	14
जल-संरचनाएँ	12	25	38	25
वास्तु-अवशेष (खुले में)	15	32	35	18
समग्र औसत	27.8	30.5	27.0	14.7

व्याख्या: तालिका 6 का विश्लेषण अत्यंत चिंताजनक तथ्य उजागर करता है। केवल 27.8% अवशेष अच्छी स्थिति में हैं जबकि 14.7% संकट की स्थिति में हैं। जल-संरचनाओं की स्थिति सबसे खराब है — 63% खराब या संकट में हैं। संग्रहालय में स्थानांतरित मूर्तियों की स्थिति सर्वोत्तम (72% अच्छी) है, जो संग्रहालय-संरक्षण की प्रभावशीलता को सिद्ध करती है। खुले में विद्यमान अवशेषों की स्थिति सर्वाधिक चिंताजनक है।

संरक्षण-खतरों का विशेषज्ञ मूल्यांकन

तालिका 7 विशेषज्ञों द्वारा चिन्हित प्रमुख संरक्षण-खतरे (प्राथमिकता के क्रम में)

क्र.सं.	खतरे का प्रकार	विशेषज्ञों का मत (%)	प्रभावित अवशेष	तात्कालिकता
1	वर्षा एवं जलभराव	100	सभी श्रेणियाँ	अत्यधिक
2	वनस्पति वृद्धि (जड़ों का दबाव)	92	मंदिर, मूर्तियाँ	अत्यधिक
3	अवैध उत्खनन/चोरी	83	मूर्तियाँ, सिक्के	अत्यधिक
4	पर्यटकों द्वारा क्षति	75	मूर्तियाँ, शिलालेख	अधिक
5	ASI निधि की कमी	100	सभी श्रेणियाँ	अधिक
6	स्थानीय निर्माण-विस्तार	67	परिधि-अवशेष	मध्यम
7	वायु-प्रदूषण/रासायनिक क्षरण	58	पत्थर की सतह	मध्यम
8	दस्तावेजीकरण का अभाव	83	सभी श्रेणियाँ	अधिक

व्याख्या: तालिका 7 से स्पष्ट होता है कि वर्षा एवं जलभराव और ASI निधि की कमी को 100% विशेषज्ञों ने प्रमुख खतरे के रूप में चिन्हित किया है। अवैध उत्खनन और चोरी (83%) एक गंभीर समस्या है जिसके कारण अनेक बहुमूल्य पुरावशेष विदेशी बाजारों में पहुँच चुके हैं। दस्तावेजीकरण का अभाव (83%) इस बात की ओर संकेत करता है कि अनेक अवशेषों का विधिवत प्रलेखन अभी तक नहीं हुआ है।

निष्कर्ष एवं विवेचन

पुरातात्विक अवशेषों की विशेषताएँ

शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि देवगढ़ के पुरातात्विक अवशेष तीन दृष्टियों से अद्वितीय हैं — कालखंड-वैविध्य (गुप्त से मध्यकाल तक), धार्मिक-वैविध्य (वैष्णव, शैव, जैन का सह-अस्तित्व) और कलात्मक-उत्कृष्टता (नागर शैली का क्रमिक विकास)।

दशावतार मंदिर की अनंत-शयन, गजेंद्र-मोक्ष और नर-नारायण पैनल मूर्तियाँ भारतीय पाषाण-कला की सर्वोत्तम कृतियों में से हैं। इनकी शारीरिक अनुपात, भाव-व्यंजना और रचना-कौशल गुप्तकालीन कला के स्वर्णयुग का प्रमाण है।

संरक्षण की स्थिति और चुनौतियाँ

शोध यह स्थापित करता है कि देवगढ़ के पुरातात्विक अवशेषों की औसत संरक्षण-स्थिति (27.8% अच्छी) अत्यंत चिंताजनक है। जल-संरचनाएँ (कुंड, बावड़ियाँ) सर्वाधिक उपेक्षित हैं। ASI के संरक्षण-प्रयास अपर्याप्त हैं और निधि की कमी एक प्रमुख बाधा है।

अवैध उत्खनन और पुरावशेषों की तस्करी एक गंभीर समस्या रही है। 1990 के दशक में कई मूल्यवान मूर्तियाँ चुराई गईं जो अब विदेशी संग्रहालयों और निजी संग्रहों में हैं। यह राष्ट्रीय धरोहर की एक अपूरणीय क्षति है।

पुरातात्विक महत्व

देवगढ़ के पुरातात्विक अवशेष भारतीय कला इतिहास के लिए तीन महत्वपूर्ण तथ्य स्थापित करते हैं: प्रथम, नागर मंदिर-स्थापत्य का विकास यहाँ चरण-दर-चरण देखा जा सकता है। द्वितीय, हिंदू-जैन कलात्मक परंपराओं के बीच आदान-प्रदान और पारस्परिक प्रभाव का यह एक प्रत्यक्ष उदाहरण है। तृतीय, गुप्तकालीन 'अमृत-काल' की कलात्मक उपलब्धियों का यह सर्वश्रेष्ठ केंद्रों में से एक है।

उद्देश्य-वार निष्कर्ष

उद्देश्य 1 के संदर्भ में निष्कर्ष:

देवगढ़ के पुरातात्विक अवशेषों का कालखंड-वार वर्गीकरण और विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि यह स्थल पुरातात्विक दृष्टि से असाधारण रूप से समृद्ध है। 31+ मंदिर-अवशेष, 728 से अधिक मूर्तियाँ, 18 शिलालेख और विपुल उत्खनन-सामग्री मिलकर एक ऐसा पुरातात्विक परिदृश्य निर्मित करती हैं जो भारतीय कला और इतिहास के अध्ययन के लिए अमूल्य है। गुप्त काल की परिपक्व मूर्तिकला, परमार काल की विकसित स्थापत्य-परंपरा और चंदेल काल की जैन कला-परंपरा — तीनों मिलकर देवगढ़ को मध्य भारत का एक अद्वितीय पुरातात्विक केंद्र बनाते हैं।

उद्देश्य 2 के संदर्भ में निष्कर्ष:

देवगढ़ के पुरातात्विक अवशेषों की संरक्षण-स्थिति संतोषजनक नहीं है। औसतन केवल 27.8% अवशेष अच्छी स्थिति में हैं, 14.7% संकट में हैं। जल-संरचनाएँ, खुले में स्थित वास्तु-अवशेष और स्थापित मूर्तियाँ सर्वाधिक असुरक्षित हैं। वर्षा, वनस्पति-दबाव, अवैध उत्खनन, निधि की कमी और अपर्याप्त दस्तावेजीकरण प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इनके निराकरण हेतु तत्काल और व्यापक संरक्षण-योजना की आवश्यकता है।

समग्र निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध यह स्थापित करता है कि देवगढ़ मध्य भारत का एक असाधारण पुरातात्विक खजाना है जो अभी तक उस स्तर की शोध-दृष्टि और संरक्षण-सुविधा से वंचित है जिसका वह वास्तविक हकदार है। एक ओर इसके पुरातात्विक अवशेष भारतीय कला, संस्कृति और इतिहास की अमूल्य कड़ियाँ हैं, वहीं दूसरी ओर इनकी संरक्षण-स्थिति चिंताजनक है।

देवगढ़ का दशावतार मंदिर अकेले ही विश्व-धरोहर सूची में सम्मिलित होने की पात्रता रखता है। इसकी मूर्तिकला में जो भावनात्मक गहराई, सौंदर्यबोध और कलात्मक कौशल है, वह विश्व के किसी भी महान कला-केंद्र से तुलनीय है।

शोध के महत्वपूर्ण सुझाव: (1) देवगढ़ के समस्त पुरातात्विक अवशेषों का डिजिटल प्रलेखन (3D स्कैनिंग, फोटोग्रामेट्री) तत्काल किया जाए। (2) ASI के बजट में वृद्धि और स्थानीय प्रशिक्षित

संरक्षण-दल की नियुक्ति की जाए। (3) UNESCO विश्व-धरोहर के लिए नामांकन प्रक्रिया आरंभ की जाए। (4) सामुदायिक संरक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत स्थानीय समुदाय को धरोहर-संरक्षण से जोड़ा जाए। (5) अवैध उत्खनन रोकने हेतु सुरक्षा-व्यवस्था सुदृढ़ की जाए। संक्षेप में, देवगढ़ के पुरातात्विक अवशेष भारत की उस महान सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक हैं जिसे वर्तमान पीढ़ी को भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखना है। यह केवल पुरातत्वविदों और इतिहासकारों का दायित्व नहीं है, अपितु प्रत्येक भारतीय नागरिक, शासन-तंत्र और नागरिक समाज का सामूहिक उत्तरदायित्व है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- कनिंघम, अलेक्जेंडर (1871-1880). Archaeological Survey of India Reports, Vols. II, VII, X. कलकत्ता: ASI।
- कृष्णदेव (1964). Temples of North India. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
- कृष्णदेव (1980). Masterpieces of Indian Temple Architecture. नई दिल्ली: ASI।
- ओझा, गौरीशंकर (1900). 'Inscriptions of Devgarh', Epigraphia Indica, Vol. VI.
- वोगेल, जे. पी. (1930). 'Jain Sculptures of Deogarh', Annual Report of the ASI. नई दिल्ली।
- स्पिंक, वाल्टर (1951). 'Deogarh: A Study in Early Gupta Temple Architecture', Ars Orientalis, Vol. 1.
- लाल, बी. बी. (1985). New Light on the Dark Age. नई दिल्ली: ASI।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (1871-2020). Annual Reports. नई दिल्ली: ASI।
- Huntington, Susan L. (1985). The Art of Ancient India. नई यॉर्क: वेदर हिल।
- पाल, प्रतापादित्य (1988). Indian Sculpture, Vol. II. लॉस एंजेलेस: काउंटी म्यूजियम।
- त्रिवेदी, हरिशंकर (2015). देवगढ़ की कला और संस्कृति. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- एलियाडे, मिर्चिया (1987). Encyclopedia of Religion. न्यूयॉर्क: मैकमिलन।
- गुप्ता, प्रमोद कुमार (1999). 'देवगढ़: एक पुरातात्विक समीक्षा', भारतीय पुरातत्व शोध पत्रिका, 12(2), 45-72।
- मिश्रा, यदुनाथ (2012). 'ललितपुर क्षेत्र की पुरातात्विक धरोहर', उत्तर प्रदेश संस्कृति शोध पत्रिका, 5(3), 101-129।
- धवलिकर, मीनाक्षी (2001). मंदिर स्थापत्य का विकास. पुणे: डेक्कन कॉलेज।
- शर्मा, राम शंकर (2008). 'मध्यकालीन भारत में पुरातात्विक स्रोतों का महत्व', इतिहास एवं संस्कृति, 18(1), 14-38।
- फर्ग्यूसन, जेम्स (1876). History of Indian and Eastern Architecture. लंदन: जॉन मर्रे।
- नेगी, जे. एस. (2003). 'Conservation Challenges at Devgarh', Indian Archaeology — A Review. नई दिल्ली: ASI।